P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-5* January- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा : पिछड़ने का प्रमुख कारण

दिनेश कुमार चारण
एसोसिएट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
राजकीय लोहिया महाविद्यालय,
चूरू, राजस्थान

चारूलता वर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर,
अंग्रेजी विभाग,
डॉ. बी आर ए. राजकीय
महाविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान

सारांश

प्रागैतिहासिक काल से लेकर हिन्दू काल और उसके आगे मुस्लिम काल तक भारतवर्ष में अभाव जैसी कोई समस्या नहीं थी, अपितु दुनिया में देश का नाम ज्ञान–विज्ञान–आविष्कार–समृद्धि के रूप में विख्यात था। प्राचीन काल में सनातन धर्म की बुराईयों के कारण दो नए धर्मों का जन्म हुआ, जिनकी वेदों में आस्था नहीं थी फलस्वरूप उन्हें नास्तिक तक घोषित कर दिया गया। इतने बड़े मतान्तर पर भी कहीं कोई संघर्ष नहीं था, धार्मिक दंगा भी नहीं! सब साथ खुशहाल रह रहे थे। विदेशी भी कई रूपों में आकर यहाँ बस गये, उनको भी सहर्ष अपना लिया गया। समाज और राज्य लगातार आग बढ़ते रहे, लेकिन अंग्रेजों ने यहाँ आकर सब कुछ उलट दिया। दुनिया का अग्रणी देश एक पिछड़े देश में परिवर्तित हो गया।

मुख्य शब्द : ब्रह्मांड बन्धुत्त्व, सिन्धु–सरस्वती सभ्यता, वैदिक सभ्यता, बौद्ध धर्म, गुप्तकाल, मौलिक, मातृभाषा।

प्रस्तावना

भारतवासियों में प्रायः एक चिन्ता दृष्टिगत होती है कि आजादी के 70 वर्ष पश्चात् भी देश में भूखमरी, गरीबी, अशिक्षा एवं बेरोजगारी क्यों व्याप्त है! गरीब व्यक्ति की बुनियादी आवश्यकताएँ अधूरी है। 21 वीं सदी का दूसरा दशक समाप्त होने को है और आज भी करोड़ों लोगों का सपना भरपेट खाना मात्र है। छत मिलना तो आसमान छूने के बराबर है। सभी के लिए शुद्ध पानी, स्वास्थ्य, शिक्षा, सड़क, बिजली व यातायात आदि सुविधाएँ उपलब्ध नहीं है, सरकारी योजनाएं लक्ष्य से कहीं दूर है। अन्तोदय के लिए आवंटित धन नेताओं, अधिकारियों व ठेकेदारों की तिजौरियों में चला जाता है। देश का नैतिक पतन तेजी से हो रहा है। राष्ट्रभक्ति भी राजनीतिक दलों में खण्डित हो गई है।

क्या कारण है इन सबका ? जबकि इस विशाल देश में संसाधनों का विपुल भण्डार है। जल, जंगल, जमीन, खनिज, पहाड़, समुद्र और जनसंख्या; सब तो है। जर्मन निवासी प्रो. मैक्समूलर[1] ने वेदों का गहन अध्ययन किया और सन् 1883 में प्रकाशित अपनी एक पुस्तक "India What Can It Teach Us" में भारतवर्ष के विषय में लिखा था कि– 'यदि हमें इस समस्त धरती पर किसी ऐसे देश की खोज करनी हो; जहाँ प्रकृति ने धन, शक्ति और सौन्दर्य का दान मुक्तहस्त से किया हो या दूसरे शब्दों में जिसे प्रकृति ने बनाया ही इसलिये हो कि उसे देख कर स्वर्ग की कल्पना साकार की जा सके, तो मैं बिना किसी हिचकिचाहट के भारत का नाम लूँगा। यदि मुझसे पूछा जाए कि किस देश के मानव मस्तिष्क ने अपने कुछ सर्वोत्तम गुणों को सर्वाधिक विकसित स्वरूप प्रदान करने में सफलता प्राप्त की है, जहाँ के विचारकों ने जीवन के सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्नों एवम् समस्याओं का सर्वाधिक सुन्दर समाधान खोज निकाला है तथा इसी कारण वह इस योग्य हो गया है कि कान्ट और प्लेटो के अध्ययन में पूर्णता को पहुंचे हुए व्यक्ति को भी आकर्षित करने की शक्ति रखता है, तो मैं बिना किसी विशेष सोच विचार के भारत की ओर ऊंगली उठा दूँगा। यदि मैं स्वयं से ही यह पूछना आवश्यक समझूँ कि जिन लोगों का समूचा पालन–पोषण (शारीरिक एवम् मानसिक) यूनानियों एवम् रोमनों की विचारधारा के अनुसार हुआ तथा अब भी हो रहा है तथा जिन्होंने यहूदियों से भी बहुत कुछ सीखा है, ऐसे यूरोपियों को यदि आन्तरिक जीवन को सच्चे रूप में मानव जीवन बनाने वाली तथा ब्रह्मांड बन्धुत्त्व (ध्यान रखिए कि मैं केवल विश्वबन्धुत्त्व की बात नहीं कर रहा हूँ) की भावना को साकार बना सकने में समर्थ सामग्री की खोज करनी हो तो किस देश के साहित्य का सहारा लेना चाहिए तो एक बार फिर मैं भारत की ओर इंगित करूंगा, जिसने न केवल इस जीवन को ही सच्चा मानवीय जीवन बनाने का सूत्र खोज निकाला है वरन् परवर्ती शाश्वत जीवन को भी सुखमय बनाने का सूत्र पा लेने में सफल हुआ है।''

मैक्समूलर ही क्या, जिसने भी भारत के अतीत को जाना वो प्रभावित हुए बिना नही रह सका। स्मरण करे, भारत की प्रागैतिहासिक काल की सिन्धु–सरस्वती सभ्यता के हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, कालीबंगा, लोथल और धौलावीर आदि सैंकड़ों नगरों व वहाँ से प्राप्त भव्य सामग्री के अवशेष! हड़प्पा के अन्न भण्डार, मोहनजोदड़ों का स्नानागार, लोथल का बन्दरगाह एवं धौलावीर का स्टेडियम आदि का स्थापत्य बेजोड़ है। मोहनजोदड़ों जैसा नगर नियोजन एवं जलनिकासी प्रणाली आधुनिक नगरों में भी नहीं है।[2] कॉसे की मूर्ति सैन्धव कला का उत्कृष्ट उदाहरण है।[3] उनके स्वर्ण आभूषणों की चमक आज भी कायम है।[4] **वह था मेड इन इंडिया।** ज्ञान–विज्ञान व तकनीक सब स्थानीय थे। सिन्धु–सरस्वती सभ्यता के लोग एक सुसंस्कृत जीवन व्यतीत करते थे।[5]

किसी कारणवश सिन्धु–सरस्वती सभ्यता नष्ट हो गई! सब कुछ शून्य हो गया। परन्तु इस भूमि के निवासी पुनः ऊठ खड़े हुए और वैदिक सभ्यता रच डाली।

वैदिक सभ्यता के मुख्य स्त्रोत चारों वेद हैं। इन चारों वेदों, उनके सहायक ग्रन्थों एवं उपनिषदों में भारत के प्राचीन ऋषि–मुनियों का ज्ञान सुरक्षित है, जो उन्होंने ईसा से हजारों वर्ष पूर्व अर्जित कर लिया था। जब भारतीयों ने लोहा खोज लिया तो समाज में आधारभूत बदलाव दृष्टिगत हुए। रामायण और महाभारत काल में भारत ने पुनः समृद्धि को प्राप्त कर लिया था।

छठीं शताब्दी ईसा पूर्व में गौतम बुद्ध ने धर्म और समाज की बुराईयों पर प्रहार किया और विकल्प के रूप में बौद्ध धर्म की स्थापना की। भारतीयों ने सहर्ष इस धर्म का भी स्वागत किया। बौद्ध धर्म की वेदों में आस्था नहीं थी और वैदिक धर्म ने बौद्ध धर्म को नास्तिक बता दिया। फिर भी भारत में कभी कोई धार्मिक दंगा नही हुआ। अर्थात आज से 2700 वर्ष पूर्व भी भारत इतना परिपक्व था कि मतान्तरों को भी सहजता से आत्मसात किया गया जबकि यूरोप में धर्म के नाम मारे गए लोगों की संख्या युद्धों से कहीं अधिक है।

यहां की सम्पन्नता एवं शांति के कारण प्राचीन काल से ही भारत में अन्य देशों के लोगों की रूचि रही है। यहां मजुमदार साहब का कथन महत्त्वपूर्ण है कि ईरान के राजा दारयबहु ने गान्धार, कम्बोज, पष्चिमी पंजाब और सिन्ध आदि भारतीय प्रदेश पर अधिकार करके अपने साम्राज्य का 20 वां राज्य बनाया और वह 10 लाख स्टर्लिंग मूल्य के बराबर सोना कर के रूप में प्राप्त करता था।[6] सिकन्दर भी यूनान से चलकर व्यास नदी तक आ गया था परन्तु मगध की शक्ति तथा चाणक्य–चन्द्रगुप्त की सक्रियता के कारण उसे लौटना पड़ा। सिकन्दर के साथ आए यूनानियों एवं मेगस्थनीज के चित्रण में भी भारत एक समृद्ध देश के रूप में दिखाई देता है। आचार्य कौटिल्य रचित अर्थशास्त्र में भारत का उल्लेख जिस चक्रवर्ती राज्य के रूप में किया है, उसे आज की भाषा में विकसित देश कहा जाता है। अतः विवेच्यकाल में भारत एक विकसित देश था।

लौह तकनीक पर आधारित नवीन कृषि प्रणाली, शिलप व उद्योगों की प्रगति से भारत में नगरीकरण की प्रक्रिया से बौद्धकाल से 300 ईसवीं के बीच लगभग 60 नए नगरों के अस्तित्व के प्रमाण मिलते है।[7] ये नगर सम्पन्नता के केन्द्र ही नहीं अपितु कला व साहित्य के केन्द्र भी थे।[8] इस काल में मध्य एशिया तक के व्यापारी व विद्वान भी भारत में आते थे। इस दौरान बहुत से विदेशी समूह यहाँ स्थायी रूप से बस गये। इन तमाम समूहों को भारत की सामाजिक व्यवस्था में समायोजित कर लेना भी तत्कालीन भारतीय समाज की प्रगतिशीलता का द्योतक है। यहाँ के शासक भी प्रजा व प्रदेश के भौतिक उत्थान के साथ नैतिकता के प्रति जागरूक थे। इनमें सम्राट अशोक का नाम सबसे ऊपर है।

सात वाहनों के बाद 300 वर्षो तक देश एक संक्रमणकाल से गुजर रहा था लेकिन गुप्त शासकों के नेतृत्व में भारत पुनः एक महाशक्ति बन गया।

गुप्तकाल के बाबत भी पूरी दुनिया के विद्वानों में कहीं कोई मतभेद नहीं है और सभी ने इसे भारत का स्वर्ण काल माना है।[9] यदि गुप्त स्थापत्य कला की बात करें तो असंख्य मंदिर, गुफाएँ व उनके लेख आज भी गौरव के साथ अपने निर्माणकाल की गाथा सुना रहे है। जिनमें तिगुवा का विष्णु मंदिर, भूमरा का शिव मंदिर, नचना का पार्वती मंदिर, देवगढ़ का दशावतार का मंदिर, भितरी गाँव का शिव मंदिर, अजंता–ऐलोरा की गुफाए एवं प्रयाग प्रशस्ति आदि उल्लेखनीय है। महरौली का लौह स्तम्भ गुप्तकाल की रसायन एवं धातु कला की विशेषज्ञता का दुनिया में सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें आज 16 शताब्दियों मे भी जंग नहीं आया है।[10] **वह था मेड इन इंडिया।**

गुप्तकालीन वैज्ञानिकों के आविष्कारों से सब अभिभूत है। आर्यभट् ने दुनिया को यह बताया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूर्णन करती है। उन्होंने ही सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण के वैज्ञानिक कारण बताए। यद्यपि आर्यभट्ट को शून्य का आविष्कारक भी माना जाता है, परन्तु यह आविष्कार पिगंलाचार्य ने ईसा से शताब्दियों पूर्व कर दिया था। इनका काल चाणक्य के निकट माना जाता है। वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, बाग्भट, नागार्जुन और भास्कराचार्य जैसे गणितज्ञ और खगोलशास्त्री गुप्त काल में ही हुए। गुप्तकाल तक विविध विषयों पर विशाल ग्रन्थों की रचना ही चुकी थी जिनमें वेद, ब्राह्मण, उपनिषद, जातक ग्रन्थ, अष्टाध्यायी, रामायण, महाभारत, पंचतन्त्र, अर्थशास्त्र, सुश्रुत संहिता, चरक संहिता, महाभाष्य, वेदांग, बुद्धचरित, बृहत कथा आदि सहित अनेक प्रतिनिधि ग्रन्थों की रचना हो चुकी थी।

यदि प्राचीन भारत के शैक्षणिक स्तर की बात की जाए तो यहाँ ईसा पूर्व की शताब्दियों में भी तक्षशिला और काशी प्रमुख शिक्षण केन्द्र थे। सातवीं सदी ईसा पूर्व में तक्षशिला ज्ञान और विद्या के केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध हो चुका था।[11] तक्षशिला में बड़े–बड़े आचार्य रहते थे। जीवक (महात्मा बुद्ध के वैद्य), चाणक्य, चन्द्रगुप्त मौर्य, विष्णु शर्मा, उपमन्यु, आरूणि और वेद आदि जैसी हैसियतों ने भी उच्च शिक्षा तक्षशिला से ही प्राप्त की थी। शिक्षा प्राप्त करने के बाद चाणक्य ने भी तक्षशिला में ही शिक्षण कार्य

प्रारम्भ किया था। तब विदेशों से भी शिक्षार्थी आते थे। इसी प्रकार गुप्तकाल में स्थापित नालन्दा विश्वविद्यालय भी विश्वविख्यात था। उस समय सुदूर–पूर्व और चीन के अनेक छात्र यहाँ पंजीकृत थे। हेनसांग ने विश्वविद्यालय की इमारतों की भव्यता का विस्तार से उल्लेख किया है। हर्षवर्द्धन काल में वहाँ 10000 छात्र व 1500 शिक्षक रहते थे।[12] समस्त व्यय राज्य की तरफ से दिया जाता था। यहाँ से उत्तीर्ण छात्रों का सर्वत्र सम्मान होता था। इसी श्रेणी में विक्रमशीला और वल्लभी विश्वविद्यालयों के नाम आते है।

दक्षिण भारत में ईसा पूर्व दूसरी सदी से ईसा की दूसरी सदी तक 473 कवियों ने महान संगम साहित्य की रचना की जिनमें शिलाप्पादिकारम, जीवक चिन्तामणि, तोल्क्पियम व मणिमेखले आदि महत्वपूर्ण महाकाव्य है।[13] दक्षिण व पूर्वी भारत की प्राचीन स्थापत्य कला के साक्षी वहाँ के भव्य मंदिर है। तिरूपति बालाजी, जगन्नाथ व सूर्य मंदिर आदि असंख्य मंदिर अपने अतीत की सुनहरी दास्तान सुनाते है।[14] शोधपत्र में बहुत संक्षिप्त अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है, अभी राजपूत व मुस्लिम काल शेष है।

मेरा इस लेख से तात्त्पर्य यह है कि ईसा के हजारों वर्ष पूर्व से 19वीं शताब्दी तक की भारत की विकास यात्रा में कोई विदेशी शिक्षक–अभियंता–वास्तुकार–चिकित्सक आदि उपस्थित नहीं था। सभ्यता का सम्पूर्ण सृजन स्थानीय था। उन्नत इतना था कि विदेशी लोग (व्यापारी, आक्रमणकारी, धर्म प्रचारक व यात्री) खीचें चले आते थे। यहाँ के शिक्षा केन्द्रों से शिक्षा प्राप्त करना विदेशी छात्रों का सुनहरा सपना था। जबकि यहाँ से कभी कोई छात्र विदेश पढ़ने नहीं गया। ना कोई युवक नौकरी के लिए और ना ही नागरिकता मांगने गया। जाने की आवश्यकता आज भी न रहती यदि हमने सन् 1947 में मैकाले की बनाई हुई राह छोड़ दी होती! काश, भारत के भाग्यविद्याताओं ने मैकाले के द्वारा फरवरी, 1835 को ब्रिटिश संसद के सम्मुख दिए गए वक्तव्य को नजरअंदाज ना किया होता। मैकाले ने कहा था –

"I have a travelled across the length and breadth of India and I have not seen one person who is a beggar, who is a thief. Such wealth I have been in this country, such high moral values, people of such calibre, that I do not think we would ever conquer this country unless we break the very backbone of this nation, which is her spiritual and cultural heritage and therefore, I propose that we replace her old and ancient education system, her culture, for it the Indians think that all that is foreign and English is good and greater than their own, they will lose their self -esteem, their native self - culture and they will become what we want them, a truly dominated nation."

मैकाले का सुझाव अंग्रेज सरकार के लिए बेहद उपयोगी था, उसे स्वीकृति मिल गई। मैकाले योजना अपना लक्ष्य पाने में सफल रही। भारतीयों का स्वाभिमान चूर–चूर हो गया। जो भारतीय, अंग्रेजी सभ्यता के सम्पर्क में आए उनको भारतीय मूल्य कमतर लगने लगे। देश आजाद हो गया और इग्लैण्ड में शिक्षित–दीक्षित चन्द भारतीयों के द्वारा करोड़ों देशवासियों का भाग्य लिखा गया। संविधान अंग्रेजी में लिखा गया, संसद की कार्यवाही अंग्रेंजी में, बजट अंग्रेजी में .....! वर्षों से अंग्रेजों के सताए हुए 99 प्रतिशत से अधिक लोग (जो अंग्रेजी से अनभिज्ञ थे) सोच रहे थे कि अंग्रेंजी से शायद कोई चमत्कार हो जाएगा। चमत्कार तो हुआ नहीं लेकिन सत्यानाश हो गया। अंग्रेजी ना सीख पाने के कारण मेरी पीढ़ी के कितने ही छात्रों को स्कूल छोड़ना पड़ा। जो रट सके उनमें मौलिकता न रही! रचनात्मकता कहाँ से आती .....! सृजन खतम .....! आविष्कार .....?

मैकाले यही चाहता था कि भारतीय अपना ज्ञान, सभ्यता और संस्कृति भूल जाए। अंग्रेजी पढ़े बहुत से भारतीय जब हमारे प्राचीन ग्रन्थों को पढ़ना चाहते है तो वे मूल ग्रन्थों को पढ़ने की अपेक्षा उनका अंग्रेंजी अनुवाद पढ़ते है, जिसमें उस ग्रन्थ की आत्मा अनुपस्थित रहती है और भाव ही बदल जाते है। ऐसे लोगों द्वारा अपने पूर्वजों को कोसते हुए नजर आना एक सामान्य सी बात है। वो पूर्वज, जिनके ज्ञान की पूरी दुनिया कायल थी। भारत के नवनिर्मित अंग्रेजो ने शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी बनाकर हमारी नस्लों को उस ज्ञान से दूर कर दिया। अंग्रेजों, मैकाले और उसके अनुयाईयों का षड़यंत्र पूरा हो गया।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत शोध पत्र में अनेक सुप्रसिद्ध इतिहासकारों की पुस्तकों की सहायता ली गई है। इनमें 1883 में प्रकाशित प्रोफेसर मैक्समूलर की पुस्तक India what it can teach vs ने उल्लेखनीय है, जो सर्व सुलभ नहीं है। सौभाग्य से मुझे यह पुस्तक मुझे पढ़ने को मिली। इसमें मैक्समूलर ने भारत और संस्कृत भाषा की अत्यधिक प्रशंसा की है। उन्होंने वैदिक साहित्य और भारतीय ज्ञान को दुनिया में श्रेष्ठ माना। वे यहां की नैतिकता के समक्ष नतमस्तक थे। इसके अतिरिक्त मजुमदार, राय चौधरी, रामशरण शर्मा, डी डी कौशांबी, रमाशंकर त्रिपाठी, जयशंकर मिश्र व सतीश चंद्र काला के ग्रंथ भी मेरे शोध पत्र के लेखन में महत्वपूर्ण संदर्भ रहे। आधुनिक समय के अध्ययन की जानकारी मैंने विकिपीडिया से प्राप्त की।

निष्कर्ष

अन्त में, मैं यह कहना चाहता हूँ कि दुनिया के किसी भी विकसित देश में शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा नहीं है। चीन व जापान इसके निकट उदाहरण है। किसी समय हमारी शिक्षा प्रणाली इतनी प्रभावी थी कि विदेशों के छात्र यहाँ अध्ययन करने में अपना गौरव समझते थे। समाज में उन्हें विशेष सम्मान प्राप्त होता था। और मुझे यह रहस्योद्घाटन करते हुए गर्व हो रहा है कि विवेच्यकाल में हमारा कोई भी छात्र विदेश में पढ़ने या काम की तलाश में नहीं गया था। यह स्थितियाँ 19वीं शताब्दी से बदलने लगी। शिक्षा से मातृभाषा को छिनते ही सब उलट हो गया। अंग्रेजी का विरोध नहीं है, यह एक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है। इसकी अपनी महत्ता है। लेकिन अपनी मातृभाषा और राष्ट्रीय भाषा की बलि देना आत्मघाती है। मेरा सुझाव है कि सरकारों को अंग्रेजी माध्यम के समानान्तर हिन्दी माध्यम के स्तरीय शिक्षण केन्द्रों की तरफ ध्यान देते हुए संस्कृत को भी प्रासंगिक बनाना चाहिए। साथ ही संस्कृत, फारसी, उर्दू व अन्य

क्षेत्रीय भाषाओं के शोध व अध्ययन के सशक्त केन्द्र स्थापित किए जाए।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *Maxmuller– India What Can It Teach Us, Page No. 31*
2. *कौशाम्बी, डी.डी. – प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता, पृ.सं. 76 एवं द्विवेदी, अंशुमान – हड़प्पा सभ्यता एवं संस्कृति, पृ.सं. 76*
3. *काला, सतीश चन्द्र – सिंधु सभ्यता, पृ.सं. 73*
4. *मिश्रा, विपिन कुमार– भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का विकास, पृ.सं. 24*
5. *काला, सतीश चन्द्र – सिंधु सभ्यता, पृ.सं. 38*
6. *मजुमदार, रायचौधुरी एवं दत्त – प्राचीन भारत का वृहत् इतिहास, भाग–1, पृ.सं. 54*
7. *प्रकाश, ओम–प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, भाग–2, पृ.सं. 128*
8. *शर्मा, रामशरण – भारत के प्राचीन नगरों का पतन, पृ.सं. 224*
9. *त्रिपाठी, आर.एस.–प्राचीन भारत का इतिहास, पृ.सं. 194*
10. *शर्मा, रामशरण –प्रारंभिक भारत का परिचय,पृ.सं. 252*
11. *मिश्र, जयशंकर – प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृ.सं. 547*
12. *चन्द, जगदीश – प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत में शिक्षा, पृ.सं. 63*
13. *संगम साहित्य – विकिपीडिया*
14. *प्राचीन भारत के मंदिरों की स्थापत्य कला– विकिपीडिया*